अनुमुख

हिन्दुस्तान विश्व का एक महान देश है और विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस देश के एक महान विचारक हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी (रह०) ने पयामे इंसानियत फ़ोरम नाम का एक अभियान चलाया जिसे देश में काफ़ी पसन्द किया गया। मानवता का संदेश कितना अच्छा संदेश है देश के सारे मनुष्य इस संदेश से प्रेम करते हैं। इन बातों से मानव के अन्दर मानवता उत्पन्न होती है और इस अभियान से देश की तरक्की (उन्नति) सम्बद्ध है।

इस से प्रेरणा पाकर विश्व के महान विचारक पयामे इंसानियत फ़ोरम के संस्थापक हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी (रह०) ने इस विशाल देश में घूम-घूम कर इन बातों को आम करने का प्रयास किया। आप को काफ़ी सफलता मिली तथा सभी राज्यों में आप का स्वागत किया गया और आज भी आप के इन संदेशों का लोग स्वागत करते हैं। पयामे इंसानियत की ओर से यह सम्मेलन २२ मई १९७५ को लखनऊ में गंगा प्रसाद मेमोरियल हाल में आयोजित किया गया था बड़ी संख्या में अधिवक्ता न्यायविदों, पत्रकार और आम जनता उपस्थित थी। यह भाषण देश के विभिन्न राज्यों में लाखों की संख्या में उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी तथा दूसरी भाषाओं में अनुवाद करके वितरित किया जा चुका है। देश के बहुत से समाचारपत्रों और मासिक पत्रिकाओं में अधिक संख्या में इसे प्रकाशित किया है।

देश में इस भाषण से अधिक से अधिक लोगों ने लाभ उठाया है। वर्तमान में पयामे इन्सानियत फ़ोरम की ओर से इस भाषण का अनुवाद कम्प्यूटर कम्पोजिंग तथा सरल हिन्दी आप की सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं इस भाषण को पुनः प्रकाशित करने पर प्रसन्नता है ताकि हमें इससे देश में प्रेम-भाई चारे का बोल बाला हो।

15-8-2003

www.abulhasanalinadwi.org

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से

सज्जनो !

इस अवसर पर जो कुछ कहना चाहता हूँ उसे व्यक्त करने के लिए कविता की दो पंक्तियों से काम लूंगा। कविता की यह पंक्तियां लखनवी अभिरूचि की द्योतक हैं। लखनऊ के एक मुशायरे में, जो नवाबी के ज़माने में हुआ था, जब एक शायर ने यह शेर पढ़ा तो मुशायरे में धूम मच गई :–

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग़ से
इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से

इस शेर की दूसरी पंक्ति अधिक प्रसिद्ध है और ख़ास ख़ास मौक़े पर पढ़ी जाती है। इसे ऐसे मौक़े पर पढ़ते हैं जब किसी घराने का कोई बच्चा बड़ा होनहार हो, जिसके ललाट पर बड़ाई के लक्षण हों और उससे बड़ी आशायें बंधी हों, अगर उससे कोई चूक हो जाती है और वह अपने ख़ानदान को बट्टा लगाता है अथवा अपने परिवार के लिए किसी मुसीबत का कारण बन जाता है तो लोग कहते हैं कि–

'इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से'

www.abulhasanalinadwi.org

आप देखिए कि आज दुनिया का नक्शा ऐसा ही है इन्सानियत के घराने को पूरब से पश्चिम तक उत्तर से दक्षिण तक इस घर के चिराग़ ही से आग लगी है, बाहर से यह आग नहीं आई।

मानव इतिहास के किसी युग में यह नहीं हुआ कि जानवरों, दरिन्दों, साँपों और बिच्छुओं ने मानवता पर कभी कोई सुनियोजित हमला किया हो। इतिहास में एक उदाहरण भी ऐसा नहीं मिलता कि अमुक साम्राज्य का पतन इस प्रकार हुआ हो और मुल्क की ईंट से ईंट बजी कि शहर के चीतों, शेरों और भेड़ियों ने उस पर हमला किया हो और इंसानों को खा लिया हो और सभ्यता का चिराग़ भी गुल हो गया हो। साँपो और बिच्छू तो शहर के अन्दर भी होते हैं लेकिन एक भी घर या ख़ानदान के बारे में इतिहास में लिखा हुआ नहीं मिलता कि साँपों और बिच्छुओं के कारण उस घर का सफाया हुआ हो मुहल्ले का मुहल्ला साफ़ हो गया हो। मानव इतिहास के जितने भी दुखान्त (ट्रेजेडीज़) हैं, मुल्कों और क़ौमों की तबाही, समाज की बरबादी की जितनी घटनायें हैं, वह सब इन्सानों के करतूत हैं। अगर मुझे माफ किया जाये तो मैं कहूँ कि मानव इतिहास

www.abulhasanalinadwi.org

के बड़े–बड़े दुखान्त और इन्सानों पर जो बड़ी–बड़ी मुसीबतें आईं वह अधिकतर उन इन्सानों की लाई हुई थीं जो ज़्यादा पढ़े लिखे थे, जो धार्मिक, सभ्य व समृद्ध थे। और अगर यह कहा जाय कि बहुत अधिक बुद्धिमान और शिक्षित लोग थे तो ग़लत न होगा किसी देश को कभी जाहिल अनपढ़ लोगों ने तबाह नहीं किया। एक घटना भी इतिहास में नहीं मिल सकती है कि कोई देश उस देश के जाहिलों के हाथ तबाह हुआ हो। उन बेचारों में इतनी समझ नहीं होती वह तो बेचारे मोटी मोटी बातें जानते हैं, उनको तो खाना पीना मिलता रहे, वह तो घातक हथियार का आविष्कार भी नहीं कर सकते। उनकी बुद्धि वहाँ तक पहुँच ही नहीं सकती। क़ौमों और सोसाइटियों की तबाही कुछ हँसी खेल नहीं है। यह किसी एक दो व्यक्ति की ग़लती अथवा किसी एक वर्ग के अत्याचार का परिणाम नहीं। जब किसी सभ्यता की सत्यता सड़ जाती है उसमें दुर्गन्ध पैदा हो जाती है तो तबाही आती है।

इतिहास में ऐसे बहुत कम उदाहरण हैं कि किसी क़ौम ने किसी क़ौम पर सैकड़ों वर्ष तक शासन किया हो, यह तो अस्वाभाविक बात है कि

कोई क़ौम बाहर से आये और उसको गुलाम बनाये और सदियों तक ग़ुलाम ही रखे। कुछ क़ौमों के पतन से अथवा किसी बादशाह या शासक की ग़लती से ऐसी स्थिति पैदा हो जाती है। स्वयं हिन्दुस्तान के इतिहास पर नज़र डालिये, जब यह व्यवस्था बिगड़ी और लोगों की मान मर्यादा ख़तरे में पड़ गई, जीवन उनके लिए अभिषाप बन गया। न शान्ति थी न सुकून। उस समय देश की आबादी साक्षात कहती थी कि कोई और ताक़त देश की व्यवस्था संभाले और उन्हें इस अभिषाप से छुटकारा दे।

सन्देश दो प्रकार के होते हैं– एक सन्देश जो आफिशियल होता है, वैधानिक और लिखित होता है और एक सन्देश होता है जो मन–मस्तिष्क और अन्तःकरण से निकलता है, आत्मा कहती है और आत्मा सुनती है। क़ौम की आत्मा जो सताई हुई है, फ़रियाद करती है। बच्चों की आह, औरतों की फ़रियाद, दुखित इन्सानों की कराह ख़ुदा तक हज़ारों पर्दों को फाड़ करके पहुँचती है पहाड़ और समुद्र इस कराह को रोक नहीं सकते। जैसा कि अल्लाह के पैग़म्बर ने कहा है, मजलूम (उत्पीड़ित) की आह से बचो, इस लिए कि वह सीधे आसमान तक

पहुँचती है, कोई चीज़ उनको रोक नहीं सकती। ख़ुदा को अपनी मख़लूक (सृष्टि) पर प्यार आता है। हमको और आपको न हो, अल्लाह को अपनी मख़लूक से हर हाल में प्यार है हर बनाने वाले को अपनी बनाई हुई चीज़ से प्यार होता है। एक कुम्हार को अपनी मिट्टी की बनाई हुई चीज़ से प्यार होता है। ख़ुदा की मख़लूक (सृष्टि) कहीं हो जब उसका दिल दुखेगा, जब उसकी मानवता धूल धूसरित होगी, जब उसकी हस्ती (अस्तित्व) को मिट्टी में मिलाया जायेगा, जब उसके अधिकार का खून किया जायेगा, जब सच्चाई को नकारा जायेगा, जब दिन को रात और रात को दिन कहा जायगा, जब बच्चों के मुँह से निवाला (खाने की कोई चीज़) छीन लिया जायेगा, जब विधवाओं की चीर ख़ीच ली जायेगी, जब ग़रीब के चूल्हे पर से तवा ख़ीच लिया जायेगा तो हर तरफ से आवाज़ आने लगती है, "हमारी मदद करो", "हमारी मदद करो"। उस समय ख़ुदा यह नहीं देखता कि इन गरीबों तथा दुख के मारे इन्सानों को नजात (छुटकारा) दिलाने वाला कहाँ से आता है यही मानव इतिहास का बार–बार का अनुभव है कि जब लोग ज़िन्दा रहते हुए मरणासन का जीवन व्यतीत करते हैं, जिनका एक घन्टा एक पल गुज़ारा

मुश्किल हो जाता है उस समय पूरे देश का पत्ता–पत्ता तिनका–तिनका और दर व दीवार यह सदा लगाते हैं, "हमें बचाओ, जीवन अभिषाप बन गया है, हम इन अपनों को लेकर क्या करें, यह हमारे किस काम के जो शान्ति स्थापित नहीं रख सकते" उस समय ख़ुदा उनको सज़ा देता है। उन ग़रीबों की मदद करता है। और आप देखेंगे कि इतिहास में जब कभी ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई तो बाहर से कोई कौम आई, उसने देश के प्रशासन व्यवस्था को संभाल लिया लाभ पहुँचाया भी और लाभ उठाया भी। इस स्थिति पर आपके माथे पर जितना भी बल आये आप को अधिकार है। लेकिन मुझे इस पर बिल्कुल आश्चर्य नहीं होता क्यों कि ख़ुदा को हर हाल में अपनी सृष्टि को तसल्ली देना है।

परन्तु यह खुली हुई बात है कि अंग्रेजों को ज़िन्होंने इस देश पर सौ वर्ष तक शासन किया, इस देश से कोई सम्बन्ध न था। वह उनके निकट केवल एक दूध देने वाली गाय की हैसियत रखता था। वह तो अपने और अपनी क़ौम के फ़ायदे के लिए आये थे और चले गये। अगर वह यहाँ से रेल पटरियों और मकानों के दरवाजें और खिड़कियों को उखाड़

www.abulhasanalinadwi.org

कर ले जाते तो मुझे कुछ आश्चर्य नहीं था, इसलिए कि उनको इस देश में रहना ही नहीं था। वह इस देश में रहकर भी अपने देश की चिन्ता में रहते थे। लेकिन आश्चर्य इस पर है कि,

'इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से'

अंग्रेज़ इस घर के चिराग़ नहीं थे। सच्ची बात यह है कि वह इस घर की आग थे। अगर वह आग लगाते भी तो हमें आश्चर्य न होता। वह यहाँ मेहमान (अतिथि) की तरह आये और मेहमान की तरह रहे। और मेहमान की तरह चले गये। उनके तो दिन गिने हुए थे। अंग्रेजों के जाने के बाद इस देश के साथ अपनों ने जो बर्ताव किया वह बर्ताव आश्चर्यजनक है। आप मुझे क्षमा करें। मैं आप ही में का एक व्यक्ति हूँ। अगर मैं आपकी शिकायत करता हूँ तो अपनी ही शिकायत करता हूँ। अगर मैं आपकी आलोचना करता हूँ तो अपनी आलोचना करता हूँ। यहाँ आपके बुलाने का उद्देश्य ही यह है कि आप वस्तुस्थिति की जांच–पड़ताल करें और हम स्वीकार करें कि :–

'इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से'

जिन लोगों ने इनका चार्ज लिया वह इस देश

www.abulhasanalinadwi.org

के मूल निवासी थे जिन का भाग्य इस देश से जुड़ा था, जिनको इस देश में जीना और इस देश में मरना था और जिन्होंने आज़ादी की लड़ाई बड़े उत्साह से लड़ी। यह अमीनाबाद पार्क जो आप से कुछ ग़ज़ के फ़ासले पर है, और मैं समझता हूँ कि यह आवाज़ वहाँ पहुँच रही है, यह पार्क अभी तक गाँधी जी, पंडित मोतीलाल नेहरू, पंडित जवाहर लाल नेहरू, मौलाना मोहम्मदुल अ़ली और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के भाषणों से गूँज रहा है यह गंगा प्रसाद मेमोरियल हाल जिस में आप इस समय एक्त्र हैं। यह इस लेखा जोखा के लिए बड़ा उचित स्थान है आज़ादी की लड़ाई के नेताओं का विशेष सभागार और स्टेज रह चुका है। मैं ने भी उनकी तक़रीरें सुनी हैं। मानो आज मैं अपनी आँखों से देख रहा हूँ। मौलाना आज़ाद, मौलाना शौकत अ़ली इस जगह खड़े होकर तक़रीर कर रहे हैं यह कल की बात मुझे मालूम हो रही है। अमीनाबाद पार्क तो आज़ादी की लड़ाई के महानतम स्टेजों में से एक स्टेज था। हमारे लखनऊ को गर्व है। आज़ादी की लड़ाई में इस का वह हिस्सा है जो हिन्दुस्तान के कम शहरों का होगा। साइमन कमीशन हिन्दुस्तान आया है। देश के नेताओं की ओर से उसके बाईकाट

www.abulhasanalinadwi.org

की अपील की गई है। इसी सिलसिले में अमीनाबाद पार्क में एक विशाल जल्सा हुआ जिसमें मौलाना मोहम्मद अ़ली और पंडित जवाहर लाल नेहरू की तक़रीर हुई। मैं इस जल्से में शरीक था इस लखनऊ में आज़ादी का बिगुल बजाया गया। इस पार्क में विलायती कपड़ों को आग लगाई गई। यह मेरी आंखों के सामने के दृश्य हैं।

केवल लखनऊ ही में नहीं सारे हिन्दुस्तान में आग लगी थी। अगर कोई व्यक्ति देखता तो वह कहता कि यह अत्यन्त योग्य लोग हैं जो इस देश की नैया पार लगायेंगे। वह लोग हैं जो इस देश को एक गुलदस्ता बना देंगे। यह वह लोग हैं जो इस देश से हर प्रकार का दुख दर्द दूर कर देंगे। यह वह लोग हैं जो केवल हिन्दुस्तानियत ही को नहीं बल्कि मानवता को ऊँचा उठायेंगे। यह वह लोग हैं जिनके ज़माने में सारी तक़लीफें दूर हों जायेंगी, अशान्ति ग़ायब हो जायेगी। अन्याय कोई जानेगा भी नहीं। अदालतें न्याय की मूर्ति होंगी। मुहकमें (विभाग) ज़िम्मेदारी और अमानत की सुरक्षा करने का नमूना होंगी। पुलिस की ज़रूरत नहीं होगी। हिन्दू–मुसलमान इस प्रकार एक दूसरे से गले मिले रहे होंगे जैसे

www.abulhasanalinadwi.org

भाई–भाई।

एकता और प्रेम तथा त्याग व बलिदान के यह दृश्य आप में से बहुत से लोगों ने देखें होंगे। किसी ने कभी सोचा भी न होगा कि अंग्रेजों के चले जाने के बाद इस देश का यह नक़्शा होगा जो हम देख रहे हैं। यह देश तो स्वयं देशवासियों के हाथों तबाह हुआ, और जैसा मैंने कहा :–

'इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से'

आज सारे देशों और सारी दुनिया में मानवता जिस प्रकार अपमानित हो रही है वह तो एक लम्बी कहानी है। मैं इस पर क्या प्रकाश डालूँ। इसके लिए तो बहुत से स्टेज हो सकते हैं मोटी–मोटी किताबें भी लिखी जा सकती हैं। लेकिन आज मुझे आप से आप की कहानी कहनी है। और मुझे तो अपना और आप का लेखा–जोखा करना है। स्वयं मुद्दई (वादी) बन कर मैं आप की और अपने विरुद्ध आप ही की अदालत में मुकदमा दायर करता हूँ। आज हमारे सामने मुल्क का जो नक़्शा है क्या आज़ादी की लड़ाई के नेताओं ने कभी इसकी कल्पना की होगी। मैं समझता हूँ कि इनमें से किसी के मस्तिष्क में यह बात आ जाती तो शायद उनके हाथ पाँव सुस्त हो

www.abulhasanalinadwi.org

जाते, और जिस उत्साह के साथ आज़ादी की लड़ाई लड़ रहे थे वह समाप्त हो जाता।

हमने देश की क्या हालात बना रखी है। हम अपने हाथों से किस प्रकार इसका हुलिया बिगाड़ रहे हैं। जैसे यह मुल्क किसी दुश्मन के हाथ लग गया है, और वह अच्छी तरह से इससे बदला चुकाना चाहता है अपने दिल का बुख़ार निकाल रहा है बिलकुल ऐसा लगता है कि हम इसको उजाड़ कर रख देना चाहते हैं। और इसको किसी क़ाबिल रहने नहीं चाहते। इस देश के साथ हमारा मामला एक दुश्मन का सा मामला है। रेलों पर सफर करके आप देख लीजिये। बसों पर सफर करके आप देख लीजिए। आप किसी विभाग में जाकर देख लीजिए। इन्साफ़ के साथ क्या हो रहा है हम स्वयं अपने देश को अपने हाथ से तबाह कर रहे हैं। रेल का हाल यह है कि पंखे, नलों की टोटियाँ, खिड़कियां, सीटों की रैगज़ीन चुराई जाती है। गलियों में मेनहोल (**Main hole**) के ढक्कन चुराये जाते हैं इसकी भी परवाह नहीं होती कि अबोध्र बच्चों की इसमें जान चली जायेगी । एक ऐसी गिरावट जिसके लिए मेरे पास शब्द नहीं। ऐसी

www.abulhasanalinadwi.org

छोटी–छोटी बातें ऐसे जनसमूह के सामने कहते हुए मुझे तकलीफ़ होती है। मैं समझता हूँ मैं अपने स्तर से गिर रहा हूँ किन्तु सच्चाई है जिसके बिना वस्तुस्थिति का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। फिर यह देखिये, क्या एक नागरिक दूसरे नागरिक को अपना भाई समझता है। और यह समझता है कि यह ख़ुदा का बनाया हुआ एक इन्सान है। बिल्कुल नहीं। हर व्यक्ति दूसरे को इस दृष्टि से देखता है कि वह एक शिकार है। आज हमारे समाज और प्रशासन में क़ीमती इन्सान से एक घातक जानवर जैसा रूखा व्यवहार किया जाता है। आज यह हाल हो गया है कि हम अपने ही तरह इन्सानों को, अपने देशवासियों को, इस देश के नागरिक को अपना भाई नहीं समझते है। हमारी रिश्वत ख़ोरी तथा भाई–भतीजावाद की प्रवृत्ति व्याप्त हो गयीं है। वही देश है जो अंग्रेजों के ज़माने में था, मगर न मालूम इसकी क्षमता का क्या हो गया है। न व्यवस्था है, न शान्ति है। किसी व्यक्ति को यह खुशियों भरा एहसास नहीं कि वह अपने घर में हैं लोग बड़ी–बड़ी इज़्ज़त, बड़ी–बड़ी दौलत छोड़कर अपने वतन आते हैं कि वतन की बात ही दूसरी होती है अपना घर और अपना मुल्क कहने का अर्थ

www.abulhasanalinadwi.org

यह है कि लोगों को वहाँ तक इतमीनान, इज़्ज़त और खुशी मिले एक को दूसरे पर भरोसा हो, एक दूसरे के दुख–दर्द में काम आये, इसी का नाम है अपना घर अपना वतन। अपने घर और अपने वतन का मतलब तो यह है कि इन्सान को वहाँ ज़्यादा आराम, खुशी और शान्ति मिलें, और अगर यह प्राप्त न हों तो लोग ऐसे वतन से क्या मुहब्बत करेंगे।

१९४७ ई० में अंग्रेजों के चले जाने के बाद मानव–प्रेम सहानुभूति, सत्यनिष्ठा व प्रेम का ऐसा आदर्श युग आना चाहिए था कि लोग दूर–दूर से देखने आते। मैं डंके की चोट पर कहूँगा कि हमने अपने को इस देश की व्यवस्था चलाने योग्य सिद्ध नहीं किया। हमारा देश प्रेम नकारात्मक (निगेटिव) तथा रूचि सकारात्मक (पाज़ीटिव) न थी। अर्थात हमारी वास्तविक रूचि व क्षमता अंग्रेज़ों को निकालने पर केन्द्रित थी। देश को बनाने संवारने से हमें ज़्यादा दिलचस्पी न थी और न इस क्षमता का हमने सबूत दिया। बहुत से लोग लड़ाई जीत लेते हैं और सुलह हार जाते हैं बहुत सी कौमें हैं जो नार्मल हालात में उस क्षमता का सबूत नहीं देतीं जो

www.abulhasanalinadwi.org

असामान्य परिस्थिति में उन्होंने दिया है। युद्ध के समय आदमी का मुक़ाबला करने की ताक़त उसकी तमाम कमज़ोरियाँ पर पर्दा डाल देती हैं। हम हिन्दुस्तानियों में कमजोरियाँ थीं, आज़ादी की लड़ाई ने इस पर पर्दा डाल दिया था। जब अशान्ति समाप्त हुई और हमारी परीक्षा की घड़ी आई तो हम असफल हो गये। दौलत जब तक नहीं होती बहुत से लोग तपस्वी बन जाते हैं किन्तु दौलत आने के बाद उनकी ज़िन्दगी का रहन सहन बदल जाता है। इस प्रकार का अनुभव हमें रात दिन होता रहता है। युद्ध काल में इन चीजों पर ध्यान देने की फ़ुरसत नहीं होती। लड़ाई की भाप निकल जाने के बाद उसकी तह में जो चीज़े होती हैं वह उभर जाती हैं जब आज़ादी की लड़ाई ख़त्म हुई तो मालूम हुआ कि हम अर्ह नहीं। हम सिर्फ अपना लाभ चाहते हैं। हमें दूसरों को फ़ायदा पहुँचाने से कोई दिलचस्पी नहीं। मालूम हुआ कि हमारे अन्दर इन्सान का दिल नहीं बल्कि चीते, भेड़िये और दरिन्दे का दिल हैं लड़ाई के ज़माने में हम क्या थे। आज़ादी की लड़ाई के समय हम ग़रीबों की सेवा करते फिरते थे, हमारे साथी जेल में थे, हम उनके घरों की सेवा करते थे। तमाम नफ़रतों (घृणा) और कटुतायें दूर हो गई थीं।

www.abulhasanalinadwi.org

हिन्दू मुसलमान का कोई भेदभाव नहीं था। आज़ादी की लड़ाई की इस आग ने हमारी आपस की दुश्मनी को पिघला दिया था।

लड़ाई की अवधि में तो सुधार का अवसर नहीं मिला था। लेकिन आज़ादी की लड़ाई शुरू करने से पहले और आज़ादी मिलने के बाद हमें कितना मौक़ा मिला था मगर हमने अपनी दीक्षा का इस अवधि में कोई सामान नहीं किया। सन् १९४७ से अब तक कितना अवसर मिला।

हम में कितनी संस्थाएं हैं, कितने लेखक व साहित्यकार हैं जिन्होंने मनुष्य में सही शहरी एहसास, मानवता के प्रति आदर की भावना और सच्चा देश प्रेम पैदा करने का सच्चे दिल से प्रयास किया है ? आज वस्तुस्थिति से हर व्यक्ति परेशान व निराश है। हर जगह भ्रष्टाचार की चर्चा है इस वस्तुस्थिति की ज़िमेदारी हम सब की है इस गन्दे पानी में हम सब गले–गले डूबे हैं। इस गन्दे पानी की आलोचना तो हर व्यक्ति करता है। मगर उसकी कोशिश यह होती है कि इसी में डूबकी लगा ले और हो सके तो उससे अपने फायदो के मोती निकाले।

आज का यह जल्सा और यह तुच्छ प्रयास

www.abulhasanalinadwi.org

नक़्क़ारखाने में तूती की जावाज़ से अधिक नहीं, भारत के लगभग अस्सी करोड़ इन्सानों का यह नक़्क़ारखाना, इस एक आदमी की आवाज़ की हैसियत ही क्या है। यह मात्र दुखदायी वस्तुस्थिति पर विरोध व्यक्त करने के लिए रास्ता ढूँढ़ने के लिए है कि शायद कोई अल्लाह का बन्दा हमारे साथ शामिल हो जाये और साथ चले।

मित्रों ! देश इस समय बहुत बड़े ख़तरे से ग्रस्त है बाहर से हमें कोई ख़तरा नहीं, वह ज़माना गुज़र गया जब एक देश दूसरे देश पर हमला करता था और एक नेशन दूसरे नेशन को गुलाम बनाता था। इसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता कि आज की हालत में कोई देश दूसरे देश पर अधिकार करे। किन्तु वस्तुस्थिति ऐसी है कि हर व्यक्ति परेशान है और वह किसी नजात (मोक्ष) दिलाने वाले की प्रतीक्षा में है हमारे देश के लोग इस वस्तुस्थिति से तंग आ चुके हैं कि न तो आज़ादी के उच्च मूल्यों का ख़याल करते हैं और न उस विद्वतापूर्ण साहित्य की कोई परवाह करेंगे जो आज़ादी की गुणवत्ता पर लिखा गया है और न उस समय की मुसीबतों का ख़याल करेंगे जो अँग्रेजों के समय में यहाँ के वासियों

www.abulhasanalinadwi.org

ने सहन की हैं। वह तो उस स्थिति को बदलने के इच्छुक हैं जो इस देश की आज़ादी से पूरा फ़ायदा उठाने में बाधक है।

भारत की आज़ादी का मानव इतिहास में एक स्थान है। किन्तु जिस देश के रहने वाले उस देश के प्रशासन से निराश हों, वह यह समझते हैं कि इस देश में हमारी जायज़ मागें हमें नहीं मिल रही हैं हम शान्ति व सम्मान का जीवन नहीं गुज़ार सकते, इससे बढ़कर प्रशासन पर से जनसाधारण का अविश्वास और क्या हो सकता है? परन्तु यह करोड़ों निर्दोष जनता, यह रास्ते का चलने वाला आम आदमी (मैन ऑफ स्ट्रीट) जिस ने राजनीति का एक शब्द भी नहीं पढ़ा है, यह राजनीतिक दाँव पेंच नहीं जानता। जो कहता है सही कहता है। यह उसके दिल की आवाज़ होती है।

मैं किसी पार्टी, किसी एक समुदाय, एक वर्ग को नहीं कहता बल्कि पार्टियों एक दूसरे के बाद की आने वाली हुकूमतों तथा नये प्रयोगों की और बुलाने वालों राजनीति, विशेषज्ञों और हुकूमत के उम्मीदवारों सब को कहता हूँ कि उन पर से जनसाधारण का विश्वास उठ चुका है।

www.abulhasanalinadwi.org

अगर आप दिलों को कुरेद सकें जिस के लिए किसी चीड़–फाड़ की ज़रूरत नहीं स्टेज पर भाषण देना, निबन्ध लिखना और चीज़ हैं, वास्तविक अनुभूति वह है जो घर में, निजी बैठकों में व्यक्त की जाती है।

अकबर इलाहाबादी ने कहा है :–

नक़शों को तुम न जाँचो, लोगों से मिल के देखो
क्या चीज़ जी रही है, क्या चीज़ मर रही हैं।

सज्जनों! सामान्यतः लोग किसी वर्ग विशेष अथवा कुछ व्यक्तियों और कभी–कभी अकेले किसी व्यक्ति को पूरी सोसाइटी की ख़राबी का ज़िम्मेदार बना देते हैं और समझते हैं कि इन तत्वों ने अथवा इस बिगड़े हुये व्यक्ति ने पूरे जीवन को ग़लत दिशा पर डाल दिया था, किन्तु मैं इस से सहमत नहीं मैं इतिहास के अध्ययन के आधार पर कहता हूँ की एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर सकती है परन्तु एक व्यक्ति पूरी सोसाइटी को बिगाड़ नहीं सकता। वास्तविकता यह है कि अच्छी सोसाइटी में बुरे आदमी का गुज़र नहीं हो सकता वह घुट–घुट कर मर जायेगा, जिस तरह मछली को पानी से निकाल दिया जाता है तो घुट–घुट कर मर जाती है उसी प्रकार जो सोसाइटी बुराई को बढ़ावा नहीं

www.abulhasanalinadwi.org

देती वह उसका स्वागत करने को तैयार नहीं उसमें बुराई तड़पने लगेगी उसका दम घुटने लगेगा और वह दम तोड़ देगा।

हर ज़माने में अच्छे बुरे इन्सान हुये हैं लेकिन सब बुराइयों का उनको ज़िम्मेदार ठहराना और तमाम बुराइयों को उनके सर थोप देना ठीक नहीं। अगर कुछ बुरे लोग आदी हो गये थे तो इसका मतलब यह नहीं पूरी ज़िन्दगी का हैन्डिल उनके हाथ में था वह जिस तरफ चाहते थे जीवन को मोड़ देते थे, बल्कि बात यह है कि उस ज़माने में सोसाइटी में स्वयं ख़राबी आ गई थी। उस समय की आत्मा गन्दी हो गयी थी। उसमें बुराईयों के प्रति लगाव उत्पन्न हो गया था। उसके अन्दर अन्धेर अत्याचार तथा कामनाओं को पूरा करने की प्रबल इच्छा पैदा हो गई थी। वह स्वार्थी, वह काम लोभी बन गई थी। जिस दिल को घुन लग जाये, जो मन पापी हो जाये, आप उसे अपराध से किसी प्रकार रोक नहीं सकते। आप उसे बेड़ियों में जकड़ कर भी रखेंगे तब भी इन चीजों से सुरक्षित नहीं रह सकता।

आज जो वस्तुस्थिति है बिलकुल बनावटी तथा अस्वाभाविक है। इस में बाक़ी रहने की क्षमता ही

www.abulhasanalinadwi.org

नहीं। यह देशवासियों की कमज़ोरी है कि हम इस वस्तुस्थिति को सहन कर रहे हैं। मैं बग़ावत का नारा नहीं देता, मैं इन्क़लाब का भी नारा नहीं देता, मैं सुधार का नारा देता हूँ। मैं भारतीय होने के नाते मानव अधिकारों की अपील कर रहा हूँ। ऐसा लगता है कि आँवे का आँवा ही बिगड़ा हुआ है। मेरा अगर उन प्रतिष्ठित व्यक्तियों तथा आन्दोलनों से सम्बन्ध नहीं होता जिन्होंने सब से पहले इस देश की आज़ादी की लड़ाई में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया था, तो मैं इतनी स्पष्टवादिता से काम न ले सकता, लेकिन मेरा हृदय व अन्तःकरण इस कटुवादिता व आलोचना के बावजूद सन्तुष्ट है। क्योंकि मेरे ऊपर मेरे पूर्वजों का रिकार्ड न सिर्फ़ साफ़ और पाक है बल्कि दिव्यमान है।

किसी देश अथवा नेशन की सुरक्षा व स्थायित्व के लिए तथा व्यक्तियों को स्वार्थ, अत्याचार व बेइमानी और ख़यानत से बचने के लिए असल ताक़त तो ख़ुदा का अक़ीदा (विश्वास) और डर है जब किसी व्यक्ति के मन–मस्तिष्क में यह विश्वास घर कर जाये कि एक ऐसी महाशक्ति है जो अन्धेरे उजाले में मुझे देखती है और मुझे उसके सामने जवाब देना है, तो वह कोई ग़लत काम नहीं कर सकता। सुधार के लिए

www.abulhasanalinadwi.org

इससे अच्छा कोई ढंग नहीं। यह वह सही शक्ति है जो चोरों को रक्षक बनाती है।

इसके बाद कुछ सीमा तक कोई शक्ति तबाही से बचा सकती है तो वह सच्ची देश भक्ति है। यह एहसास हो कि यह हमारा देश है, हमारा शहर है ईश्वर न करे किसी देश में यह दोनों भावनायें समाप्त हो जाये वरना दुनिया की कोई ताक़त उसको तबाही से बचा नहीं सकती। योरोप आज देश भक्ति की भावना के कारण बाकी है। उसने दो महायुद्ध झेले हैं। योरोप दो बार खून के दरिया में नहाया है।

हम पर तो मात्र खून के छींटे पड़े हैं। योरोप तो खून के सागर में प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध में डूब कर निकला है। विश्वयुद्ध में कुछ बड़े बड़े शहर तबाह हो गये थे, मगर वहाँ के लोगों की सच्ची देशभक्ति थी जिसने फिर उन्हें संसार के मानचित्रों पर महत्व दिलाया। खण्डहर और मल्वे पर एक नया देश, एक नया शहर उभर आया। योरोप में हजार खराबियाँ, भौतिकवाद व नास्तिकता, दुराचार तथा भोग–विलास की उन्नति है मगर सच्ची देश–भक्ति, न्यायप्रियता, कर्तव्यपरायणता तथा प्रत्येक नागरिक

www.abulhasanalinadwi.org

के अधिकारों की रक्षा व जान व माल की सुरक्षा के एहसास ने उसको थाम रखा है।

यदि किसी देश में न तो ईश्वर का डर हो, न सच्ची देश भक्ति हो तो उस को विकास योजनायें, तथा भौतिक विकास तबाही से बचा नहीं सकते। हमारे देशवासी इस वस्तुस्थिति पर ठंडे दिल से मनन करें।

अन्त में मैं अपने मुसलमान दोस्तों और भाइयों से कहूँगा कि उनकी इस मौक़े पर दोहरी ज़िम्मेदारी है एक तो यह की उसकी धार्मिक पुस्तक कुरआन और उनके पैग़म्बर की शिक्षा उनको न सिर्फ़ इस आम बिगाड़, इस फैली हुई आग, तथा दौलत की पूजा के इस बहते हुये गन्दे पानी से बचने का सदुपदेश देती है बल्कि उन पर रोकने और इससे लोगों को बचाने की ज़िम्मेदार भी ठहराती है। उनके पैग़म्बर ने साफ़ तरीक़े पर समझा दिया है कि अगर किसी नवका के किसी सवार को भी ऐसे अप्रिय कार्य से दूर रखने को कोशिश न की गई जिस से यह नवका ख़तरे में पड़ जाती है, और यह नवका डूबी तो फिर इस नवका का कोई भी सवार बच न सकेगा। और यह नवका अच्छे व बुरे दोषी

www.abulhasanalinadwi.org

और निर्दोष, सोते–जागते सब के साथ डूब जायेगी, और उस समय कोई नेकी और कोई बुद्धिमता काम न आयेगी।

उनकी दूसरी ज़िम्मेदारी का कारण यह है कि वह इस देश में मानवता के प्रति आदर, न्याय व समता और समाजी इन्साफ़ का संदेश लेकर आये थे। और उन्होंने इस देश की बड़ी कठिन घड़ी में मदद की। यह संदेश उनकी धार्मिक शिक्षाओं में अब पूरे तौर पर सुरक्षित है। अगर उन्होंने देश की सोसाइटी की इस डूबती तथा डगमगाती नवका को बचाने का भरसक प्रयास न किया तो वह ख़ुदा के सामने दोषी और गुनाहगार ठहरेंगे और इतिहास में कर्तव्य को न पहचानने वाले बल्कि अकृतघ्न तथा अपराधी ठहराये जायेंगे।

समाप्त

www.abulhasanalinadwi.org